किये गए छोटे छोटे सत्कर्म ही जीवन की सच्ची कमाई हैं

एक बार शिक्षक दिन पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने स्कूलो के विद्यार्थीयों के साथ टीवी पर सीधी बातचीत की थी| तब उनको पूछे गए एक प्रश्न के जवाब के दौरान उन्होंने बताया था की जीवन में कुछ बनने के लक्ष्य से भी कुछ करने का लक्ष ज्यादा महत्वपूर्ण है| उनको जब पूछा गया की क्या आपने जीवन में प्रधानमंत्री बनने का स्वप्न सँजोया था| उसके उत्तर में उन्होने बताया कि प्रधानमंत्री बनने का स्वप्न तो नहीं सँजोया था, लेकिन जीवन में कुछ नया करना है, ऐसा स्वप्न जरूर देखा था और उसके परिणाम स्वरूप ही आज इस स्थान तक पहुँचा हूँ|

जीवन में सदविचार और शुभ भावनाओं का अत्याधिक महत्व है, परंतु उनसे भी ज्यादा महत्व के हैं व्यक्ति के सत्कर्म | कोई भी व्यक्ति जब कोई कर्म करता है, उसके पहले उस कर्म को करने का विचार मन में आता है, उसके बाद उस कर्म को करने कि भावना पैदा होती है | उसके बाद उस कर्म को करने का निर्णय लिया जाता है और अंत में वह कर्म करता है| लेकिन विचार, भावनाए या निर्णय यदि कर्म में फलीभूत नहीं होते हैं तो उन विचारों या भावनाओं का विशेष कोई महत्व नहीं रहता| इसलिए कहा जाता है कि “कर्म ही बलवान है”| विश्व नाटक का यदि कोई महत्वपूर्ण शाश्वत सिद्धांत है तो वह ”कर्म का सिद्धांत” है | उसमे भी यही कहा गया है कि “जैसा बोएंगे वैसा काटेंगे“| मनोविज्ञान भी कहता है की व्यक्ति के व्यक्तित्व का आधार उसके अर्धजागृत मन पर पड़ी हुई छाप हैं | इन पड़ी हुई छापों में कर्मो से पड़ी हुई छापें खूब गहरी होती हैं| इसीलिए व्यक्ति के सकारात्मक या नकारात्मक व्यक्तित्व के सर्जन में भी उसके द्वारा किए जा रहे कर्म ही अधिकतर जवाबदार होते हैं|

जब गांधीजी को पूछा गया था कि आपका विश्व के लिए क्या संदेश हैं? तब उन्होने उत्तर दिया था कि ‘मेरा जीवन ही मेरा संदेश हैं |’ अर्थात गांधीजी ने अपने जीवन में प्रेकिटकल में जो भी करके बताया वही उनका संदेश है | गीता में भी कर्मयोग का ही महत्व बताया गया है | तुम जो सत्कर्म करते हो वही योग है |

इन सत्कर्मो में भी नियमित रूप से दिनभर किए गए छोटे-छोटे सत्कर्मो का बहुत महत्व है | एक-दो बड़े सत्कर्म करके जीवन मे कोई सिद्धि प्राप्त करके हम दुनिया में प्रत्यक्ष होकर लोगों के ध्यान में आएं इस के बजाय छोटे-छोटे सत्कर्म करके अनेकों को सहयोग दे, उनकी दुआएं प्राप्त करें, यही जीवन की सच्ची कमाई है | भले ही वे कर्म बिलकुल सामान्य क्यों न हो !

किसी गंदे स्थान की सफाई कर देना, किसी अपंग या अंधे को रास्ते में मदद कर देना, रास्ते में फंसी हुई अपनी

लारी को बाहर निकालने की कोशिश करते व्यक्ति को सहारा देकर लारी बाहर निकालने में मदद रूप होना, दुर्घटना में घायल हुए व्यक्ति को तुरंत अस्पताल ले जाना, घायल हुए पशु या पक्षी का प्रेम से इलाज करना, फी नहीं भर सकने के कारण स्कूल छोडने की परिस्थिति में चिंतित विद्यार्थी की फी भर देना, वृक्षो की देखभाल करना, साथ-साथ नए पौधो को लगाना, विशेष रूप से बच्चों और महिलाओं प्रति स्नेह और सन्मानपूर्वक व्यवहार करना, पानी और बिजली की बचत करना, किसिको आध्यात्मिक ज्ञान की सच्ची समझ देकर जीवन की सच्ची दिशा पर मोड़ना, निराश या हताश हुए व्यक्ति में उमंग-उत्साह भर देना इत्यादि छोटे-छोटे सतकर्मो से बहुत दुआए मिलती हैं |

इस प्रकार के हमारे सत्कर्म किसी के ध्यान में ख़ास आते नहीं हैं और हम कोई प्रत्यक्ष फल भी प्राप्त नहीं करते हैं, इसलिए ऐसे कर्म अधिकतर संचित-जमा हो जाते हैं और हमारे अनेक जन्म सुधर जाते हैं | इसके अलावा इस प्रकार के सत्कर्मो से जीवन मे जो खुशी और संतोष का अनुभव होता हैं, वह दूसरे किसी बात से प्राप्त नहीं हो सकता | विश्व का प्रत्येक व्यक्ति यदि दिन में ऐसे तीन से पाँच सत्कर्म करे तो हमारे कल्पना के रामराज्य की स्थापना सरल बन जाएगी |

इस दिशा में लोगो को जागृत करने और ऐसे सत्कर्मों को करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा सात अरब सत्कर्म एकात्रित करने की एक महायोजना का वैश्विक स्तर पर आयोजन किया गया था, जो अति सफल और

प्रशंसनीय रहा । इस योजना के अंतर्गत संस्था के अनेक सेवाधारी भाई-बहनो **ने** विश्वभर में अनेक लोगों का संपर्क किया और उनको दिनभर में ऐसे छोटे-छोटे सत्कर्म करने के लिए प्रेरणा दी | लोगो से सत्कर्म करने के लिए संकल्प-पत्र भी लिखवाये |इस कार्यक्रम दौरान सात अरब जीतने सत्कर्म एकत्रित करने का संस्थाने लक्ष्य रखा था | आपसे भी यही अपेक्षा है की आपभी गुप्त में एसे सत्कर्म करते रहे और एक श्रेष्ठ समाज की स्थापना करने में सहयोगी बने |

------ ॐ शांति ------

ब्र.कु.प्रफुल्लचंद्र;सानडिएगो;युएसए

WhatsApp +91 98258 92710